7/7/2020

FOR SEM-6
CORE-14

राष्ट्रभाषा से विश्वभाषा की ओर हिन्दी

लोकल से ग्लोकल बनती हिन्दी की चुनौतियाँ

डॉ. सुनीता कुमारी गुप्ता
हिन्दी विभाग, मारवाड़ी कॉलेज राँची

हिन्दी का विश्वव्यापी विराट् रूप हम सबके लिए गर्व और गौरव का विषय है। यह हिन्दी के अनवरत् संघर्ष का ही परिणाम है कि लोकल से ग्लोबल बनने की दिशा में हिन्दी के बढ़ते कदम अति सराहनीय हैं। हिन्दी अब सिर्फ भारत की भाषा ही नहीं, बल्कि उन भारतवासियों की भाषा भी है जो विदेशों में रहते हैं. हिन्दी स्वभाषा है, विश्वभाषा भी। इसमें कोई संदेह नहीं कि आज विदेशों में लम्बे समय से जो भारतीय रह रहे हैं उनकी दूसरी-तीसरी पीढ़ी भी सामने आ गयी है, उन संततियों के मन में अपने माता-पिता या दादा-दादी के देश को जानने की उत्कंठा बलवती होती जा रही है। वैश्विक मानचित्र पर भारत का निरन्तर बढ़ता वर्चस्व भी इसका प्रमुख कारण है। पश्चिम में विकास से अघाये एवं अतिसंतृप्त मन को भारत में मौजूद विकास की अनन्त सम्भावनाएँ आकर्षित कर रही है। भारत से दूर विदेशों में बसे अनेक भारतीयों के अन्तस में यह इच्छा भी बढ़ती जा रही है कि उनके बच्चे हिन्दी भाषा जरूर सीखें भारत विश्व का बड़ा और आकर्षक बाज़ार है। भारत के विस्तृत आर्थिक परिदृश्य से विदेशी कम्पनियाँ प्रभावित हैं। उन्हें स्पष्ट से यह महसूस हो रहा है कि

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER

भारत में कदम जमाने के लिए हिन्दी ज्ञान जरूरी है। हिन्दी ज्ञान उन्हें उनके व्यापार को ऊँचाई तक ले जाने में मददगार होगा। फलस्वरूप विश्व के लगभग 170 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी पठन-पाठन में छात्र-छात्राओं की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। प्रबल आवश्यकता इस बात की है कि विश्वभर में हिन्दी प्रचारित-प्रसारित हो एतदर्थ हिन्दी शिक्षण-प्रशिक्षण की दिशा में नई प्रविधि एवं शोध किया जाय। इसके लिए मानक पाठ्यक्रम के निर्माण पर भी जोर दिया जा रहा है। इस बात पर भी जोर दिया जाय कि हर देश के लोग अपनी स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण में अपनी भूमिका निभाएँ। विश्व के विभिन्न देशों के छात्र हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त करें हिन्दी किसी पर थोपी न जाय, बल्कि उन्हें अपनी रुझान व क्षमता तथा जरूरत के मुताबिक हिन्दी सीखने की दिशा में पाठ्यक्रम अपनाने की आजादी भी है। हिन्दी सीखने के क्रम में ही उनमें हिन्दी के प्रति रुचि उत्पन्न होगी, रुचि बढ़ेगी और तक वे हिन्दी साहित्य और दर्शन को पढ़ने सीखने और समझने की दिशा में अगला बड़ा कदम बढ़ायेंगें।

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER

विश्व के मानचित्र पर एवं वैश्विक जनमानस में हिन्दी की छवि मूर्त हो सके इसलिए यह भी जरूरी है कि हिन्दी को शास्त्रीय बंधन से मुक्त किया जाय, भाषिक आडम्बर से भी हिन्दी भाषा मुक्त हो हिन्दी की सभी शैलियों को खुली हवा में साँस लेने की छूट दी जाय बनावटी और आडम्बरपूर्ण भाषा से बचने की जरूरत है- हिन्दी आजाद है हिन्द की तरह अरबी - फारसी के अल्फाज हिन्दी के दुश्मन हैं - इस गलतफहमी से बचने की नितान्त आवश्यकता है। प्रान्तीय बोलियाँ भी हिन्दी के साथ चलें - ऐसी प्रवृत्ति को पनपाने की जरूरत है। हिन्दी हमेशा अपनी परम्परा और प्राचीनता रूपी दादी की पोशाक पहनी रहे यह भी जरूरी नहीं। इस भ्रामक अवधारणा से बचे रहने की आवश्यकता है कि कोई छोटा सा या मामूली सा काम करना हो तो हिन्दी ठीक है, पर कोई बारीक या गम्भीर काम करने - करवाने हो तो हमें अंग्रेजी की शरण में आना होगा

हमारी कामना है कि देवनागरी लिपि विश्वनागरी बने। हमारी यह लिपि दुनिया की सबसे सरल एवं वैज्ञानिक लिपि है। हिन्दी का शब्द-संसार विराट् है, इसकी शब्द सम्पदा अपार है, अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी में अंग्रेजी के एक - एक शब्द के लिए अनेक पर्याय हैं। असंख्य लोगों के अनुभव से शब्दों का

INTECH

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER

निर्माण होता है। अंग्रेजी की तुलना में हम सभी कारखानेदार हैं, हम खदान के मालिक हैं। हमारे पास शब्द निर्माण करने की क्षमता भी है एवं विधि और विधि-प्रविधि भी। हिन्दी ने अनेक भाषाओं के शब्दों को भी आत्मसात् किया है। सभी शब्दों का विपुल खजाना हिन्दी के पास है। हमें एवं सरकार को भी यह बात समझनी होगी कि समाज के निर्माण में भाषा की महती भूमिका होती है। शब्द मूल्य-वान होते हैं, मूल्य एवं प्रतिमानों की स्थापना करने में, आचार-विचार-व्यवहार एवं संस्कार प्रदर्शन में भाषा का बड़ा दायित्व है, भाषा परिवेश से पनपती है एवं परिवेश में पलती है और परिवेश में प्रयोग-व्यवहार द्वारा उसकी वृद्धि एवं समृद्धि होती है। विदेशी भाषाएँ, विश्व के अनेक देशों की भाषाएँ हिन्दी में घुल-मिल गयी हैं। इनमें भाषाओं एवं बोलियों के अनगिनत शब्दों एवं मुहावरों को हिन्दी में आत्मसात् किया है और लगातार करती जा रही है। अंग्रेजी ने भी भारतीय भाषाओं के अनेक शब्दों को अपने शब्द भंडार में स्थान दिया है। हिन्दी भाषा के साथ विश्व की अनेक भाषाओं के शब्दों का पारस्परिक विनिमय सुखद संकेत देता है। विपुल शब्द भंडार के संचयन एवं संग्रहण हेतु प्रामाणिक वृहद-शब्दकोश की आवश्यकता है और इस दिशा में

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER

लगातार काम हो रहे हैं।

हिन्दी तीसरी दुनिया की सम्पर्क भाषा है। हिन्दी हमारी अस्मिता है, हमारी पहचान है। विधि व विविध व्यवहारों की भाषा के रूप में हिन्दी स्थापित - प्रतिष्ठित हो गयी है। वास्तव में किसी भी कही और समर्थ भाषा के मूल्यांकन का केन्द्रीय आधार यह है कि उसमें व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त होने की कितनी क्षमताएँ और संभावनाएँ हैं। निश्चित रूप से इस निकष पर हिन्दी ने अपनी सार्थकता और प्रयोजनीयता सिद्ध की है। हिन्दी में साहित्यिक विधाओं का रचना - संसार तो विपुल है ही, साथ ही जीवन के सभी इलाकों में हिन्दी ने अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज की है। विदेशों में भी हिन्दी साहित्य को प्रतिष्ठा मिल रही है। इधर हिन्दी ने आदर्श, सम्पूर्ण और विभाजित भाषा के रूप में अपने प्रकार्य एवं संभावनाओं का लगातार विस्तार किया है। सभी प्रायोजनिक क्षेत्रों में हिन्दी ने शब्द - संग्रह और शब्द - निर्मिति से लेकर - भाषिक संरचना तक सबका निरंतर विकास किया है। हिन्दी की अद्यतन उपलब्धियों तथा विशाल पैमाने पर फैलाव इसके स्वर्णिम भविष्य का संकेत करते हैं, क्योंकि हिन्दी ने सभी प्रयुक्ति-क्षेत्रों में अपनी क्षमता का परिचय दिया है। हिन्दी प्रयुक्ति-एवं अभिव्यक्ति का संसार विराट है। यदि यही कारण है कि सभी वर्गों के लोग अधिकारी, व्यापारी, खिलाड़ी

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER

राजनेता, अभिनेता, वकील आदि सभी अपनी हिन्दी बोलते हैं। हिन्दी का यह प्रयुक्तिमूलक वैविध्य अति विलक्षण है और इसके लिए हिन्दी ने अपनी भाषिक संरचना को बेहद लोचदार बनाया है। अनगिनत स्रोतों से आगत शब्दों का स्वाग स्वागत किया है। रोजगार-मूलक भाषा के रूप में हिन्दी की प्रयोजनीयता में निरंतर वृद्धि हुई है, जीवन की जीवंत भाषा के रूप में हिन्दी आहत हो चुकी है। इक्कीसवीं सदी के लगभग 19 वर्ष बीत चुके हैं। इन वर्षों में हिन्दी किन-किन ~~गलियों~~ गलियों, पगडंडियों और राजमार्गों से गुजरकर कहाँ पहुँची है, उस पर चर्चा करने से कुछ प्राप्त नहीं होगा। इतने प्रकार की हिन्दी हमारे आस-पास के दैनिक व्यवहार में है कि भाषा चिन्तक भी विस्मित और विचलित हैं। इन्टरनेट से लेकर टेलीविजन तक, कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक अमृतसर से लेकर रेजल तक, फेसबुक से लेकर नीतीबुक तक हिन्दी की प्रयुक्तियाँ इतनी बहुआयामी है कि इक्कीसवीं सदी की ~~के~~ ~~ब~~ हिन्दी के सामने नित नयी चुनौतियाँ उभर रही हैं। एक चुनौती तो हिन्दी भाषा के ~~ब~~ परिसर में सब ओर व्याप्त भूमंडलीकरण, उत्तर ~~आ~~ आधुनिकता, उत्तर उपनिवेशवाद बाजारवाद आदि की आंधी तो है-ही, जिसने सोच-विचार के सारे प्रचलित और स्वीकृत मानकों को

अपदस्थ करने की ठान ली है। स्वभावतः हम हिन्दी के बारे में जो वैश्विक परिप्रेक्ष्य में बात-चीत के अभ्यासी हो गए हैं और हिन्दी का कोई भी पक्षधर रवी सदी की दहलीज पार करने बाद ग्लोबल सोच से इतर नहीं सोचता। विश्व मंच पर आसीन हिन्दी को आसन्न चुनौतियों का सामना करने की शक्ति जुगाड़ करनी होगी। इन्टरनेट की विश्व क्रांति में अब हिन्दी भाषा भी शामिल है। आज हिन्दी में अनेक होटल पोर्टल, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग ई-मेल भेजने और पाने की सुविधा इन्टरनेट जनसंचार प्रणाली पर उपलब्ध है। तमाम इलेक्ट्रानिक श्रव्य-दृश्य माध्यमों और पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी नये क्षेत्रों में विकसित हो रही है। हिन्दी में संगणक का कुंजी पटल बनना अभी बाकी है। आज भी अँग्रेजी में डी.टी.पी. तकनीक जितनी विस्तृत और सुलभ है उतनी हिन्दी में होना अभी बाकी है। यह भी सच है कि गूगल जैसी सर्च मशीन पर हिन्दी में खोज की सुविधा उपलब्ध है। गूगल की नयी व्यवस्था के अन्तर्गत आप अंग्रेजी में टाइप करते जाइए और उसका हिन्दी में अनुवाद अपने आप होता जाएगा। यह अपने आप में एक महत्वपूर्ण पहल है। सच तो यह है कि संसार भर में इन्टरनेट का उपयोग करने वाले देशों में हमारे देश का स्थान दूसरा है। लेकिन अभी भी भारत की आबादी का साठ प्रतिशत इंटरनेट के ज्ञान और उपयोग से वंचित है। विश्व मंच

INTECH

पर खड़ी हिन्दी के सामने यह बहुत कड़ी चुनौती है कि वह सायबर स्पेस की दुनिया में अपने को पूरी सशक्तता के साथ स्थापित करे, अपनी क्षमता प्रदर्शित करे। हिन्दी की अभिव्यक्ति को बेहतर और ताजा बनाये रखने के लिए आत्ममुग्धता की लक्ष्मण रेखा से बाहर निकलकर पाचनशक्ति की विशालता का परिचय देना होगा। जैसे हिन्दी में तिथि, दिनांक, तारीख और समानार्थी हैं। लेकिन उनकी प्रयुक्ति उन्हें विशिष्ट अर्थवत्ता प्रदान करती है। इसी आधार पर पुण्यतिथि को पुण्यतारीख नहीं लिखी जा सकती है। अदालतें तिथि नहीं, तारीख तय करती है। कोई लड़की डेट पर जाय तो उसे तिथि या तारीख पर भेजना उचित नहीं होना चाहिए। इसलिए अब हिन्दी में तिथि के साथ ही साथ तारीख और डेट को भी अपनाना होगा। हिन्दी शब्द भण्डार में किसी भी भाषा और बोली के शब्दों को स्वीकार लेना इस सदी की चुनौती ही है। इस देश के अलग-अलग महानगरों और राजधानियों में अलग-अलग किस्म की हिन्दी का प्रचलन है, इस बात यह बात किसी से छिपी हुई नहीं है। मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, चायना की हिन्दी तो और भी भिन्न है। इन सारी भाषिक और लोकप्रचलित व्यवहारों की विविधता के बीच हिन्दी को आज की सदी के योग्य बनना होगा।

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER

INTECH

तभी हिन्दी हिंग्लश और अँग्रेजी के बीच से अपनी सही राह का संधान कर सकेगी। आइए, हम इन चुनौतियों से जूझ रही एक समर्थ भाषा, एक जीवंत भाषा के प्रति अपनी सांद्देश्य प्रतिबद्धता साकार करें। हिन्दी को इस शताब्दी के मध्य तक अपने लक्ष्य तक पहुँचाने में सबका साथ स्वच्छ, पारदर्शी, मानसिकता के साथ जरूरी है।

भौगोलिक आधार पर हिन्दी को हम विश्व भाषा मान सकते हैं, क्योंकि हिन्दी को बोलने एवं समझनेवाले संसार के सभी महाद्वीपों में फैले हैं। जनतांत्रिक आधार पर भी हिन्दी विश्व भाषा है, क्योंकि हिन्दी बोलने-वालों ~~के बीच~~ समझने वालों की संख्या संसार में तीसरी है। एशियाई संस्कृति में हिन्दी की विशिष्ट भूमिका है, हिन्दी एशिया की प्रतिनिधि भाषा है। अफगानिस्तान, ईरान फ्रांस की खाड़ी के तटवर्ती देश - श्रीलंका, वर्मा एवं दक्षिण पूर्व एशिया के सभी देशों में जाने अनेक भारतवासियों के कारण हिन्दी का उपयोग एवं प्रचलन बहुत अधिक है। संसार भर में लगभग 184 विश्व-विद्यालयों में हिन्दी विभिन्न स्तरों पर पढ़ाई जा रही है, यह लगातार प्रसारित होती हिन्दी की सक्षमता का प्रमाण है। अपने भीतर स्वयं हिन्दी ने अन्तरराष्ट्रीय जगत् को शामिल कर लिया है। आर्य, द्रविड़, आदिवासी, अंग्रेजी, अरबी, चीनी, जापानी, पुर्तगाली, जर्मन, फ्रेंच आदि भाषाओं के शब्द हिन्दी में शामिल है। यह हिन्दी की वसुधैव कुटुम्बकम् एवं अन्तरराष्ट्रीय

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER

INTECH

मैत्री को प्रदर्शित करती है। भारतीय दर्शन के विश्वमान्य व स्वीकृत सिद्धान्त - विश्वकरुणा, विश्वमैत्री, सत्य प्रेम - अहिंसा, विश्वभावना जैसे लोककल्याणकारी भावनाओं की वाहिका है हिन्दी। हिन्दी का रथ आगे बढ़ चुका है, इसे कोई रोक नहीं सकता। विश्वशान्ति और महाशान्ति बनने की दिशा में आगे कदम बढ़ा चुके भारत के मुँह में उसकी अपनी जुबान होगी, अपनी जिह्वा होगी, अपनी हिन्दी होगी।

डॉ. सुनीता कुमारी गुप्ता
हिन्दी विभाग
मारवाड़ी कॉलेज राँची
7/7/2020

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER